Basics of Talent Identification in Sports

S.S.Roy[1], Rajdeep Kaur[2],Y.Momo Singh[3]

ABSTRACT

Talent identification कार्यक्रमों को ओलंपिक और विश्वचैंपियनशिप जैसे महत्वपूर्ण खेल आयोजनों के दौरान खोलों में उत्कृष्टता प्राप्त करने की संभावना को बेहतर बनाने के लिए दुनिया भर के विभिन्न देशों में विकसित किया जा रहा हैं। भारत जैसे विकासशील देशों के लिए एक अच्छा *Talent identification* कार्यक्रम विकसित करना वांछनीय है, जिससे अंतर राष्ट्रीय स्तर के साथ तालमेल बरकरार रहें। इस *Article* का उद्देश्य खेल में *Talent identification* की पहचान के लिए इस्तेमाल हो रहें विभिन्न तरीकों का व्याखा करना और समकालीन भारत में इनके महत्व की एक सिंहावलोकन पेश करना हैं।

INTRODUCTION

Talent identification कहने को तो दो शब्द हैं पर इसके मायने को किसी भी सीमा में बान्धा नहीं जा सकता। कोई भी गणित का ऐसा फार्मूला नहीं जिसका उपयोग करके या यह कहा जा सकता हैं कि कोई ऐसा उपकरण नहीं जिसका प्रयोग करके यह Identify किया जा सके कि एक 12–13 साल का बच्चा क्या वास्तव में International खिलाड़ी बन पायेगा ? अगर बनेगा तो कौन सा खेल उसके लिये सर्वेपरी उत्तम रहेगा ?

Prediction यानि की अनुमान लगाया जा सकता है। Assessment यानि मूल्यांकन किया जा सकता है कि बच्चा खिलाड़ी बन सकता है के नहीं। पर बढ़ते बच्चे का Talent identify करना Particular sport के लिये तथा उसके International खिलाड़ी बन पाने के लिए अनुमान लगाना असंभव तो नहीं पर भारत जैसे विकासशील देश में थोड़ा मुशकिल जरूर है।

यह सच है कि Technology का जमाना है दिन-प्रतिदिन कुछ नया ही हो रहा है। जागरूकता बढ़ रही है। Net पर काफी information available है, कैसे अच्छे से अच्छा Training plan हो। Age और physical activity के हिसाब से खिलाड़ियों का क्या खान पान हो सकता है ? Recovery के क्या–क्या Methods हैं, कैसे Performance को बढ़ाने के लिए Food supplements help करते हैं। पर यहां मुद्दा यह है कि यह identify कैसे किया जाए कि यह बच्चा एक बढ़िया खिलाड़ी बन सकता है या नहीं ? Basic fundamentals क्या हैं जिनको ध्यान में रख कर Talent को identify करना चाहिए? ताकि प्रयास ऐसा रहे कि वह identify किया हुआ बच्चा कम से कम International level का खिलाड़ी जरूर बने, Olympic मे जाने के लिए Qualify जरूर करे, Medal आना न आना अलग बात है। यह कहना मुशकिल है कि देश का चयन किया हर बच्चा International खिलाड़ी बनेगा, पर यह जरूर कहा जा सकता है चयन किये बच्चों मे से मात्र 5% बच्चे Olympic मे Qualify जरूर कर सकते है अन्यथा तो coach की मेहनत, बच्चे का बहूमुल्य समय, और सरकार का खज़ाना भी खर्च होगा।

1 Executive Director, SAI NS NIS, Patiala.
2 Dean, Faculty of Sports Sciences, SAI NS NIS, Patiala.
3. Jr. Scientific Officer, Sport anthropometry, SAI NS NIS, Patiala.

किसी भी इमारत के खड़े होने पर जैसे इमारतों की नीव का role होता है वैसे ही Talent Identification की अलग–अलग Batteries का प्रयोग करते वक्त इन fundamental मुद्दो का काफ़ी अहम role हैं:–

Assessment of Child's Developmental Status

यानि की Talent identify करते वक्त बच्चे की प्रगति दर का मूल्यांकन करना। India में competitions age- category के Basis पर होते हैं। Under 12, Under-14, Under 16 and so on.

जब की वास्तविक्ता यह है कि एक ही उम्र के बच्चों की विकास की दर अलग–अलग होती है। विकास दर अलग–अलग होने से एक ही उम्र के बच्चों में 10cm height में और 4 से 5 किलो Body Weight में फर्क हो सकता है। Aged based competitions में वो बच्चों जो उम्र के हिसाब से तो बराबर हैं पर growth दर में तेज होने के कारण Medal ले लेते हैं। यह सोच कर Medalists का चयन कर लिया जाता हैं कि वह आने वाले समय में बढ़िया perform करेंगे। पर होता यह है कि तेज growth वाले बच्चे कम समय में ही Peak performance दे कर exhaust हो जाते है तथा internationsl level के competitions तक कायम नहीं रह पाते। की गई सारी मेहनत बेकार चली जाती है। वक्त, पैसा और परिश्रम सब विफल हो जाते हैं। इस दौड़ में वो बच्चे पीछे छूट जाते हैं जिनकी विकास की दर औसत या मंद (धीरे) होती है। इससे कोई शक नहीं कि यह पीछे छूटे बच्चे ही लंबी रेस के घोड़े और मैडल जीतने वाले खिलाड़ी होते हैं, क्योंकि इनमें पीक परफोरमेंस आनी बाकी होती है। इसलिए यह जरूरत है कि बच्चो की Development age examine किया जाए।

METHOLOGY

कई Methods है जिन से बच्चे की Development age निकाला जा सकते है। बच्चे के विकास की उम्र को examine करना मुशकिल नहीं है। किसी भी बच्चे की developmental age जानने के लिए उचित तरीके व जानकारी उपलब्ध है। जैसे किसी भी खिलाड़ी की developmental age चार Methods से निकाल सकते हैं :–

i. Morpholigical age द्वारा

इसमें बच्चे की Height और weight check किया जाता है। अगर उम्र के हिसाब से बच्चे की Height या weight ज्यादा है तो बच्चे की विकास दर तीव्र है अगर कम है तो उसकी विकास दर धीरे है अगर standard value के नज़दीक है तो वह औसतन विकास दर का बच्चा है।

ii. Dental Age द्वारा

हर एक दांत के निकलने का एक fixed time होता है। हर एक व्यक्ति में 28–32 दांत होते हैं। जिनके निकलने का समय अलग–अलग पर तय होता है। किसी भी दांत की उपस्थिती तथा अनुपस्थिती उसकी उम्र की पूरक होती है।

iii. Secondary sex characteristics द्वारा

Secondary sex characteristics भी एक निर्धारित समय पर शरीर पर appear होता है। इसकी भी उपस्थिती एंव अनुपस्थिती व्यक्ति की developmental age को point करती है।

iv. Skeletal age के द्वारा

इस Method में x-rays के द्वारा developmental age निकालते हैं जिसकी accuracy 99 % तक होती है।

DISCUSSION

बेहतर यह होता है कि इन सभी Methods को एक–एक करके इस्तेमाल किया जाए व फिर बच्चे

की विकास दर का अनुमान लगायें जाए। विकास दर को देखकर बच्चे की न सिर्फ correct age का पता चलता है बलकि उसकी योग्यता का भी पता लगाया जा सकता हैं की वह किस खेल के योग्य हैं। कई खेलों में वो बच्चे अच्छा करते हैं जिनमें विकास दर तीव्र हो जैसे कि सभी Power games (Wt.lifting, Boxing, Wrestling, Throwing etc.) ,कुछ Sports में वह बच्चे चाहिएं जो धीरे विकास गति के हो जैसे Shuttle games (Badminton T.T.etc.), Training plan भी बच्चे की विकास दर को देखते हुए करना चाहिए।

जब तक भारत में टैलेंट Identification के समय बच्चे की development उम्र को examine नहीं किया जायेगा तब तक आशा के अनुरूप खेल के नतीजे प्राप्त नहीं हो पायेंगे। यह पूर्ण आशा से कहा जा सकता हैं कि यह एक कदम Talent Identification में कारगार साबित होगा।

Spectrum of Body Types

इसके मायने है कि चयन करते वक्त Examine करें कि बच्चें को जिस खेल के लिए Select किया है क्या उसकी Body की बनावट–उसका size, shape, proportions, different ratios (अनूपात) उस खेल के अनुरूप है कि नहीं।

वो धरती जिस में गेहूं या चावल लगाने जा रहे हैं अगर गेहूं या चावल की पैदावार के लिए उपयुक्त ही नहीं है तो कैसे भरी पूरी फसल तैयार होगी ? अगर बच्चा दौड़ में Select करना है शरीर उसका पहलवानो की तरह है या शरीर पतला दुबला है और उसे पहलवानो में चुना है तो बात कैसे बनेगी। खिलाड़ी एक नज़र में पहचान में आ जाना चाहिए की वह किस खेल का है। Body की बनावट का अध्ययन करते हुए तीन aspects पर ध्यान देना अति आवश्यक हैं:–

a) शरीर में मोटापन, relative fatness कितनी है (यह कम से कम होनी चाहिए)

b) शरीर में मांस पेशियों का विकास, relative muscularity कैसा है (यह ज्यादा से ज्यादा होनी चाहिए)

c) Body weight का body height के साथ क्या ratio (अनुपात) है, यह Different game, Different sports, Different events के लिए– अलग–अलग होना चाहिए।

अगर इन तीन aspects को Talent Identification के वक्त consider करेंगे तो बेहतर Talent को Identify कर पायेंगे।

Geographical advantaages in Identification of Talent

Talent Identification के वक्त इस बात का खास ध्यान रखना चाहिए कि जिस District से Talent को Identify करना है, जिस District मे Talent को develop करना है वहां किस तरह की facilities हैं। इन available facilities की एक लिस्ट तैयार होनी चाहिए। फिर उसके मुताबिक यह प्रयत्न करना चाहिए की उस District से कैसे Talent Identify कर के develop किया जा सकें।

Family Orientation Attitude & Aptitude towards Sports

Talent Identify करते वक्त यह अत्यन्त जरूरी है कि हर एक बच्चे की पूरी pedigree तैयार की जाए। Pedigree में बच्चे के माँ बाप का Details (Age, education, occupation etc) लिखा होना चाहिए। Pedigree में बच्चे के भाई बहन का जिक्र हो उनकी Age, education, occupation etc उपलब्ध हो। कुछ प्रश्नावली हो जिसका उत्तर माँ बाप से लेना चाहिए। प्रश्नावली sports के प्रति Attitude & Aptitude प्रर्दशित करती हो। इन सबसे यह पता चलेगा कि जो Talent identify किया जा रहा है वह sports के प्रति कितना वफादार है, Sports उसकी चाहत,

लगन और ध्येय है या फिर सिर्फ मजबूरी और time pass करने का तरीका या फिर किसी professional degree में Admission लेने का एक जरिया।

Birth Order and Sports

यहां एक और Important मुद्दे का जिक्र करना जरूरी है की जब Pedigree बनाया जा रहा हो तो यह देखा जाए की बच्चे का Birth order family में क्या है ? अगर बच्चा Birth order में पहले नंबर पर है तथा घर में एक ही बच्चा है तो इस बच्चे का लम्बी रेस का होना स्म्भव नहीं होता । परिवार के पहले और दूसरे नंबर के Birth order के बच्चों का कभी Dangerous sports में चयन नहीं करना चाहिए। माँ बाप कुछ वक्त के लिये शायद हां बोल दे पर बच्चे पर हमेशा माँ बाप का Presure रहेगा इन परिसिथितियो में Talent के पुर्णतया Develop नहीं किया जा सकता। कुछ Exceptional cases होते है पर Family orientation देख कर, pedigree बना कर, प्रशनावली के सन्तोषजनक उत्तर पाकर ही यह निर्धारित किया जाना चाहिए कि पहले या दूसरे Birth order के बच्चे को select करना है या नही ? और फिर क्या उसका selection Dangerous sports जैसे Boxing, wrestling, water sports etc. इत्यादि के लिए करना है या नहीं।

CONCLUSION

अन्त में बस इतना करना हैं की Talent Identify करते वक्त Mass participation ensure किया जाए। Talent Identification के सिद्धांत है के सिद्धांत है 'PYRAMID' यानि base, बहुत चौड़ा– बहुत ज्यादा, फिर उपर से अर्थात Vertex से बिल्कुल Narrow यानि माना जाए Talent Identification के जरिए 100 बच्चों को select किया गया है तो उपर Vertex पर 10 बच्चे हो जो Elite हो। 10 में से पांच बच्चे हो जो Olympic में Qualify करें। इस तरह Ultimately दो से पांच प्रतिशत बच्चों को Olympian बनाया जाए तो Talent Identification का सफर कामयाब रहेगा।

दो महत्वपूर्ण बातें, राज्य और coaches का recruitment करना बहुत जरूरी है, बिना coaches के कोई Talent Identificationकारगार नहीं होगी। राज्य में कई अस्पताल बन रहे हैं इन्हीं अस्पतालों में Sports Medicine और Sports Science के Section भी बनाना चाहिए। इससे खेलों का विकास scientific तरीके से होगा।

इस अनुच्छेद द्वारा यह कोशिश की गई है की Talent Identification के बारे में सरल शब्दों में कुछ महत्वपूर्ण जानकारी दिया जाये पर वास्तव में यह जानकारियां इतनी सरल नहीं हैं।

REFERENCES

Acheson, R.M. (1996). Maturation of the Skeleton. In 'Human Development.' Falker, F (Ed.), Saunders, Philadelphia, pp. 465.

Greulich, W.W. & Pyle, S.I. (1959). Radiographical Atlas of Skeletal Development of the Hand and Wrist (2nd Ed.), Palo, Alto, Stanford University Press, California.

Marshall, W. A. & Tanner, J.M. (1969). Variation in the Pattern of Pubertal changes in girls. Arch. Dis. Childh., 44: 291.

Marshall, W. A. & Tanner, J.M. (1970). Variation in the Pattern of Pubertal changes in boys. Arch. Dis. Childh., 45:13.

Tanner, J.M. (1978). Foetus into Man. Harvard University Press, Cambridge.

Tanner, J.M., Whitehouse, R.H., Marshall, W.A., Healy, M.J.R. & Goldstein, H. (1975). Assessment of skeletal maturity and prediction of adult height: TW2 method. Academic Press, New York.

Singh, S.P., Sidhu, L.S., & Singh, J. (1992). Skeletal Maturity. Human Biology Publication society, Punjabi University, Patiala.

---------o---------